17 जनवरी 2008, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

पर्याय की पामरता के नाश का उपाय पर्याय की पामरता का चिंतन नहीं, स्वभाव की सामर्थ्य का श्रद्धान है, ज्ञान है।
ह्न बा. भावना अनु., पृष्ठ-173

वर्ष : 30, अंक : 20 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जनवरी (द्वितीय), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

सिद्धचक्र महामण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 23 दिसम्बर, 07 से 1 जनवरी, 08 तक श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल उदयपुर द्वारा श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन का 28 वें राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया गया। इसके साथ ही आध्यात्मिक प्रवचन शृंखला एवं युवा-वर्ग शिक्षण-शिविर का आयोजन भी सम्पन्न हुआ।

समारोह का शुभारंभ डॉ. हुकमचदजी भारिल्ल के करकमलों से ध्वजारोहणपूर्वक हुआ। प्रथम दिन विशाल शोभयात्रा निकाली गई। जिसमें डॉ. भारिल्ल को धर्मध्वज लेकर हाथी पर एवं अन्य विद्वानों को विशिष्ट विद्वानों को वाहनों पर बिठाया गया।

इस अवसर पर ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के अध्यात्मरस से भरपूर प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया (मंगलायतन) एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री श्योपुर के समयसार पर हुए प्रवचनों को श्रोताओं ने चातक की भाँति भाव-विभोर होकर सुना।

इसी प्रसंग पर पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा, डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया मुम्बई एवं स्थानीय विद्वान डॉ. महावीरप्रसादजी टोकर, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री, पण्डित हेमंतकुमारजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रकुमारजी शास्त्री इत्यादि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर आयोजित श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान के आयोजन कर्त्ता श्री आई.एस.जैन मुम्बई थे। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, पण्डित चिन्मयजी शास्त्री एवं पण्डित आदित्यजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये।

दिनांक 28 दिसम्बर को रात्रि में ज्ञाताजी झांझरी उज्जैन के निर्देशन में मैनासुन्दरी नाटिका संक्षिप्त सुन्दर मंचन किया गया। एक दिन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा 17 वर्ष की आयु में लिखे गये खण्ड काव्य 'पश्चाताप' का संगीतमय प्रस्तुतिकरण हुआ।

महोत्सव के दौरान डॉ. भारिल्ल के करकमलों से धन्यमुनिदशा प्रथम एवं द्वितीय भाग का विमोचन हुआ तथा श्री भागचन्दजी कालिका उदयपुर की ओर से 'चिन्तन की गहराईयाँ' नामक पुस्तक नि:शुल्क वितरित की गई।

इस अवसर पर लगभग 9 हजार 840 घंटों के सी.डी. प्रवचन एवं 40 हजार 700 रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को साहित्य की कीमत कम करने हेतु 15 हजार रुपये की दान राशि प्रदान की गई।

चेन्नई में व्याख्यानमाला

चेन्नई : यहाँ श्रीमद् राजचंद्र स्वाध्याय मण्डल (टी. नगर) के विशेष आमंत्रण पर 23 वर्षों बाद डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल चेन्नई पधारे। यहाँ के सुविख्यात हॉल सी.यू.शाह भवन में नूतनवर्ष के अवसर पर दिनांक 1 से 8 जनवरी, 08 तक प्रतिदिन दोनों समय आपके प्रवचनों की धूम रही। आपके द्वारा 'समयसार का सार' पर हुये दृष्टान्तपरक सारगर्भित व्याख्यानों को अपार भीड ने खूब सराहा। अन्तिम तीन दिनों में **'भगवान आत्मा और उसकी प्राप्ति के उपाय'** विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

आपने सायंकाल तत्त्वचर्चा में सभी सम्प्रदायों के साधर्मियों की शंकाओं का तार्किक शैली में रोचक ढंग से समाधान किया गया।

इसी अवसर पर प्रतिदिन दोनों समय ब्र. हेमचन्दजी हेम, देवलाली के प्रवचनसार पर प्रवचनों का लाभ भी मिला।

शनिवार दिनांक 5 जनवरी को रात्रि में डॉ.भारिल्ल द्वारा रचित खण्ड काव्य 'पश्चाताप' की सी.डी. द्वारा संगीतमय प्रस्तुति हुई।

अंतिम दिन दोनों विशिष्ट विद्वानों का श्री अरुण जैन (चेयरमेन-पोलारीस सोफ्टवेयर) एवं श्री शांतिभाई भायाणी द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री नवनीत पी. शाह ने किया।

इस अवसर पर 30 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं डॉ. भारिल्ल के 90 हजार 800 घण्टों के प्रवचन कैसिट्स (सी.डी.,डी.वी.डी.) घर-घर पहुँचे।

ज्ञातव्य है कि व्याख्यानमाला के दो दिन पूर्व दिनांक 30 एवं 31 दिसम्बर को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल **पौन्नूर हिल** पधारे, यहाँ श्री अनंतभाई ए. शेठ एवं श्री निमेषभाई शाह का पूरा परिवार उपस्थित था। क्षेत्र पर आपके समयसार का सार विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

सम्पादकीय – कहानी

चाँटे का काम काँटे से

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

माँ दूरदर्शी थी। उसने दूर तक का उपाय सोच रखा था कि ह्न 'यदि कदाचित् पुन: काँटा लग भी गया तो मैं उससे भी बेटे को एक और नया पाठ पढ़ा दूँगी।'

माँ के प्रेमपूर्ण आग्रह से उसे मन्दिर जाने के संस्कार तो पड़ ही गये थे। एक दिन उस बालक को मन्दिर जाते समय ही दूसरी बार फिर पाँव में काँटा लग गया।

बेटे ने घर आकर माँ से पूछा ह्न 'माँ ! अब तो मैंने बहिन से लड़ना–झगड़ना बिल्कुल बन्द कर दिया। अब मुझे काँटा क्यों लग गया ?'

माँ ने कहा ह्न 'बेटा ! यदि जमीन देखकर नहीं चलोगे अथवा ऊपर मुँह उठा कर चलोगे तो रास्ते में पड़े काँटे को तो यह पता नहीं होता कि **नटखट** साहब नंगे पैर पधार रहे हैं; अत: मुझे रास्ते से हट जाना चाहिए।'

'अरे भोले बच्चे ! काँटा तो अजीव है न ! हमें ही देखकर चलना होगा। जमीन पर देखकर चलने से हमें दो लाभ हैं ह्न प्रथम तो काँटों से बचेंगे और दूसरे, हमारे पैरों के नीचे आकर जीव नहीं मरेंगे, जीवों की रक्षा करना भी तो अहिंसा धर्म है। इससे पुण्यार्जन होता है, पुण्योदय से लौकिक सुखों की प्राप्ति होती है। अत: हमें देखकर ही चलना चाहिए।'

इसप्रकार माँ ने बेटे को इस बार काँटा लगने पर **चरणानुयोग की शैली** में अहिंसा पालन करने रूप सदाचरण का मार्गदर्शन दे दिया।

संयोग से जब उस बालक को तीसरी बार फिर काँटा लग गया तो बेटे ने माँ से पूछा ह्न 'माँ ! तूने जो भी कहा, उन सब बातों का मैंने पूरी तरह पालन किया। मैं जब छोटा था और नासमझी में बहिन से लड़ता–झगड़ता था तो तेरे कहने से ही मैंने लड़ना–झगड़ना बन्द कर दिया था। दुबारा काँटा लगने पर तूने रास्ते में देखकर चलने को कहा तो मैंने भूमि देखकर चलना–फिरना चालू कर दिया। अब तीसरी बार काँटा क्यों लगा ?'

माँ ने कहा ह्न 'बेटा ! सावधानी से देखकर चलने पर भी जब पिछले किए पाप के फल मिलने का समय आता है तो काँटा नजर नहीं आता और वह पैर में चुभ जाता है। तूने अभी तो गाली देना, लड़ना–झगड़ना छोड़ दिया, और देखकर भी चलता है, परन्तु पहले जो क्रोधादि करके पापभाव किए, उनका फल आने का समय आ गया और तेरे पैर में काँटा लग गया। अत: अब यदि तु पाप भी नहीं करेगा तो भविष्य में भी तुझे काँटें नहीं लगेंगे।'

बेटे ने पूछा ह्न 'माँ ! वे कौन–कौन से काम या भाव हैं, जिनसे पापबन्ध होता है ?'

माँ ने बताया ह्न 'देखो बेटा ! दु:ख करना, शोक करना, पश्चात्ताप करना, जोर–जोर से रोना आदि भाव ऐसे हैं, जिनसे हमें ऐसा पापबन्ध होता है कि जिसके फल में ये प्रतिकूल परिस्थितियाँ बनती हैं। अत: हमें इन सबसे भी बचना चाहिए और प्रसन्नचित्त रहना चाहिए। फिर काँटें नहीं लगेंगे।'

अब बेटा पूर्ण आश्वस्त हो गया और उसने रोना तथा दु:खी होना भी बन्द कर दिया और सदा हँसमुख व प्रसन्न चित्त रहने लगा। परन्तु होनहार की बात है कि उसे चौथी बार फिर काँटा लग गया। तब उसने माँ से कहा ह्न 'अब मैं दु:खी भी नहीं रहता। सदा प्रसन्न रहने का ही प्रयत्न करता हूँ, फिर ये काँटे बार–बार क्यों लगते हैं ?'

ज्ञातव्य है कि तीसरी बार काँटा लगने पर माँ ने **करणानुयोग की शैली** में पापकर्म के फल की बात कहकर भावकर्म व द्रव्यकर्म के निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्ध का ज्ञान करा दिया।

ह्न ह्न ह्न

इस तरह पिछले पाँच–छह वर्षों में मैंने तेरे कहने से अपने में इतना सुधारकिया। फिर भी बार–बार काँटे क्यों लगते हैं ?

बेटा अब काफी समझदार हो गया था और माँ से सही बात समझना चाहता था कि काँटे लगने से इन बातों का क्या सम्बन्ध है ? और माँ बार–बार काँटे लगने के कारणों को क्यों बदल–बदल कर समझाती है ?

जब चौथी बार काँटा लगा तो माँ ने द्रव्यानुयोग की शैली का ज्ञान कराते हुए कहा ह्न 'देखो बेटा ! प्रत्येक वस्तु का परिणमन स्वतन्त्र है, काँटा भी एक वस्तु है, उसका जिस विधि से जब जैसा परिणमन होना होगा, उसका उसी विधि से वैसा ही परिणमन होगा। उसे हम–तुम तो क्या, इन्द्र व जिनेन्द्र भी नहीं बदल सकते।

इसीलिए तो कवि बुधजनजी ने निम्नांकित पद्य में निर्भयता का सन्देश देते हुए कार्य के नियामक पाँचों कारणों का ज्ञान कराया है ह्न

जाकरि जैसे जाहि समय में, जो हो तब जा द्वार।
सो बनि है टरि है कछु नाहीं, कर लीनो निरधार।।

अर्थात् जिस द्रव्य का जिस विधि से जिस काल और जिस निमित्त से जैसा परिणमन होना है, उस द्रव्य का, उसी काल में, उसी विधि से एवं उसी निमित्त से वैसा ही परिणमन होकर रहता है। अत: दु:खी मत होओ।

जब तक राग–द्वेष रूप भाव रहेंगे, तब तक किसी न किसी बाह्य कारणों के निमित्त से लोक में सुख–दु:ख के कारण बनते ही रहेंगे। अत: यदि सच्चा सुख प्राप्त करना हो तो छह द्रव्य, सात तत्त्व, देव–शास्त्र–गुरु आदि प्रयोजनभूत बातों का सही–सही स्वरूप समझकर तदनुसार अपना जीवन बनाना होगा।

इसप्रकार माँ ने चाँटे का काम काँटे से निकालकर बेटे के जीवन को उत्कृष्ट धर्ममय बना दिया। ●

अन्तर्राष्ट्रीय दिगम्बर जैन मुमुक्षु महासंघ के तत्त्वावधान में

श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा तीर्थधाम सिद्धायतन में आयोजित

श्री महावीरस्वामी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

कार्यक्रम स्थल
तीर्थधाम सिद्धायतन,
द्रोणगिरि, जनपद बड़ामलहरा,
जि.–छतरपुर; 9425305708

मंगलमय आमंत्रण

जिनशासन का श्रेष्ठतम मंगलमय अनुष्ठान ।
भविजन सभी पधारिये प्रभु का पंचकल्याण ।।
महा महोत्सव में स्वागत है, शुद्धातम के रसिक जनों का ।
सिद्धआयतन में आमंत्रण सिद्ध समान भविक जनों को ।।

मंगलवार, दिनांक 5 फरवरी से सोमवार, 11 फरवरी, 08 तक

विशेष आकर्षण

* 8 फरवरी, 08 के जन्मकल्याणक के पावन अवसर पर 50ह्न25ह्न20 फुट के विशाल सुन्दर पालने में बालक महावीर का पालना झूलन।
* ध्रुवधाम बांसवाड़ा एवं सिद्धायतन द्रोणगिरि के छात्रों द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
* 10 फरवरी को ज्ञान कल्याणक के अवसर पर समवशरण जिनालय में निर्मित 18 जिनवाणी मंदिरों में जिनवाणी एवं गुरु चरण वेदी पर आचार्यों भगवंतों के चरणों की स्थापना।
* गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की 120वीं जन्म–जयन्ती के प्रतीक स्वरूप विद्यमान 20 तीर्थंकर जिनालय पर मार्बल के आकर्षक 120 कलशों की स्थापना।

महोत्सव के गौरवशाली पात्र

बाल तीर्थंकर के माता–पिता
श्रीमती विमलादेवी–पं.कोमलचंदजी जैन, टड़ा
यज्ञ नायक
श्री निहालचंद–श्रीमती अचरजबाई जैन, जयपुर
सौधर्म इन्द्र ह्न इन्द्राणी
मस्ताई प्रमोद–निशा जैन, घुवारा
कुबेर–कुबेराणी
श्री नमन–रूपल शाह, मुम्बई
ईशान इन्द्र – इन्द्राणी
श्री आशुतोष जैन, रायपुर
सानत इन्द्र – इन्द्राणी
श्री मुकेशकुमार–चन्द्रिका जैन, मुम्बई
माहेन्द्र इन्द्र – इन्द्राणी
श्री जितेन्द्रकुमार–हेमलता जैन, मुम्बई

अन्य इन्द्र–इन्द्राणी
श्री अशोककुमार–विद्या जैन, जबलपुर
डॉ. अनिल–डॉ.संयोगिता जैन, घुवारा
व्या ज्ञानचंद–कांतिबाई, शाहगढ़
पं.बाबूलाल–केसरबाई, बड़ामलहरा
इंजी. ताराचंद–सरोज जैन, छतरपुर
इंजी. विनोद–अलका निरखे, मलकापुर
इंजी. सुनील–सरोज जैन, छतरपुर
मास्टर दयाचंद–चमेलीबाई, अमरमऊ
श्री कैलाशचंद–स्वाति शाह, मुम्बई
श्री अनुज–चेतनज्योति, रहली
श्री विमलकुमार–ममता जैन, जबलपुर
श्री राजेशकुमार–भारती जैन, गौरझामर

कैसे पहुँचे द्रोणगिरि ह्न मुम्बई की ओर से पधारनेवाले लोग सागर (कामायनी एक्स.1071) अथवा ललितपुर (पंजाब मेल–2137) उतरें। सागर से बड़ामलहरा होकर बस द्वारा 3 घण्टे में तथा ललितपुर से वाया बानपुर, टीकमगढ, घुवारा होकर बस द्वारा 3 घण्टे में पहुँचा जा सकता है। **दिल्ली रूट** से आनेवाले लोग झांसी स्टेशन पर उतरें, वहाँ से बस द्वारा छतरपुर, बड़ामलहरा होकर 4 घण्टे में पहुँच सकते हैं। जयपुर/कोटा से आनेवाले (दयोदय एक्स–2182) द्वारा सागर उतरें।

ध्वजारोहणकर्त्ता : श्री महावीरप्रसादजी जैन फिरोजाबाद
सिंहद्वार उद्घाटनकर्त्ता : श्रीमन्त सेठ डालचन्दजी जैन, सागर
प्रतिष्ठामण्डप उद्घाटनकर्त्ता : श्री माणकलालजी ठाकुर्डिया, उदयपुर
प्रतिष्ठामंच उद्घाटनकर्त्ता : श्री सुधीरकुमार जैन, कटनी
महावीर विधान उद्घाटनकर्त्ता : सेठ गुलाबचन्दजी जैन, सागर
यागमण्डल विधान उद्घाटन : श्री अशोककुमारजी जैन, भोपाल
मानस्तम्भ उद्घाटनकर्त्ता : श्री मुकेशकुमारजी जैन, देवलाली

नोट : महोत्सव में पधारनेवाले आवास की व्यवस्था हेतु पूर्व सूचना अवश्य दें। यात्रा हेतु श्री अमितोश (09425171975)से सम्पर्क करें।

निवेदक

अध्यक्ष : मा. चंद्रभान जैन, 9993403851
मंत्री : मस्तांई प्रेमचंद जैन, 9981055460
एवं समस्त ट्रस्टीगण, श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट
स्वागताध्यक्ष : प्रेमचंद बजाज, कोटा; **स्वागतमंत्री :** सुनील सर्राफ, सागर
अध्यक्ष : सेठ गुलाबचंद जैन–9425170989
कोषाध्यक्ष : आदित्यकुमार जैन सागर–9425170520
महामंत्री : पण्डित अभयकुमार शास्त्री–9420225393
मंत्री : पण्डित राजकुमार शास्त्री–9414103492
एवं सभी सदस्यगण, महावीरस्वामी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति

ध्वजारोहण	गर्भ (6 माह पूर्व)	गर्भ कल्याणक	जन्म कल्याणक	तप कल्याणक	ज्ञान कल्याणक	मोक्ष कल्याणक
5 फरवरी,08	6 फरवरी,08	7 फरवरी,08	8 फरवरी,08	9 फरवरी,08	10 फरवरी,08	11 फरवरी,08

सिद्धचक्र मण्डल विधान सम्पन्न

1. भोपाल (म.प्र.) : यहाँ चौक बाजार स्थित जैन मंदिर में दिनांक 9 से 16 दिसम्बर तक श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन रात्रि में ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के ग्रंथाधिराज समयसार की ग्यारहवीं गाथा पर मार्मिक प्रवचनों के साथ ही पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के सारगर्भित प्रवचन हुये। आपके प्रवचनों से पूर्व ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र.जतीशचंदजीके निर्देशन में पण्डित सुनीलजी'धवल' भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर एवं पण्डित प्रयंककुमारजी शास्त्री रहली ने सम्पन्न कराए।

प्रतिदिन दोपहर में पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के समयसार पर हुए व्याख्यान हुये। सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति के उपरान्त ब्र. समताबेन उज्जैन द्वारा देव-शास्त्र-गुरु पूजन (युगलजी कृत) की जयमाला के आधार से कक्षा ली गई। इस अवसर पर 35,000 रुपये का सत्साहित्य बिका।

2. बैंगलौर (कर्नाटक) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 17 से 24 नवम्बर, 07 तक श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर पण्डित संजयकुमारजी अलीगढ़ के विधान की जयमाला एवं पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री के मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुए साथ ही अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

डॉ. भारिल्ल विद्यासागर इंस्टीट्यूट में ...

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 8 दिसम्बर, 07 को विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में एम.बी.ए. एवं बी.बी.ए. के विद्यार्थियों के लिये डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का '**मैं स्वयं भगवान हूँ**' विषय पर मार्मिक प्रवचन हुआ, जिसे सभी विद्यार्थियों ने मंत्रमुग्ध होकर सुना। इसी प्रसंग पर ब्र. हेमचन्दजी हेम के अंग्रेजी भाषा में उद्बोधन का लाभ भी मिला।

इस अवसर पर यू.एस.ए. से डॉ. नवीनचन्दजी एवं अशोकजी सेठी के अतिरिक्त श्री विमुक्त जैन बैंगलौर, ए.के. जैन एवं संस्थान के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री सुरेशचन्द जैन आदि उपस्थित थे।

शिविर सम्पन्न

सोनागिर सिद्धक्षेत्र (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 23 से 30 दिसम्बर, 07 तक दिल्ली वालों की धर्मशाला में दिल्ली से पधारे लगभग 100 आत्मार्थी बंधुओं के यात्रा संघ द्वारा सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित शैलेष भाई जबलपुर के बारह भावना एवं पण्डित पूरणचंदजी मौ के विधान की जयमाला पर प्रवचन हुए साथ ही पण्डित संदीपजी शास्त्री द्वारा छहढाला तथा पण्डित अंकितजी शास्त्री द्वारा बालकक्षा ली गई।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित सचिनजी शास्त्री, पण्डित अमितजी शास्त्री एवं पण्डित संजीवजी जैन के निर्देशन में सम्पन्न हुए। इस अनुष्ठान का आयोजन श्री इन्द्रसेनजी जैन, दिल्ली वालों की तरफ से किया गया था।

क्या आप चाहते हैं कि ....

* आपके बालकों का जीवन तत्त्वज्ञान से आलोकित एवं सदाचार से सुगन्धित हो ?

* आपके बालकों के हृदय में सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के प्रति वास्तविक बहुमान हो ?

* आपके बालकों को चारों अनुयोगों का सामान्य ज्ञान हो ?

यदि हाँ तो उसे आज ही भारतवर्षीय वीतराग-विज्ञान पाठशाला समिति के सहयोग एवं प्रेरणा से स्थापित स्थानीय वीतराग-विज्ञान पाठशाला में प्रवेश दिलाइये।

इस समय देश में 428 पाठशालायें चल रही हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

* वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड जयपुर द्वारा स्वीकृत बालबोध, प्रवेशिका, विशारद, परीक्षाओं का पाठ्यक्रम एवं अन्य फुटकर ग्रन्थों की शिक्षा।

* प्रशिक्षण-शिविरों में प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा रोचक शैली में अध्यापन।

* नन्हें-मुन्ने बालकों पर धार्मिक पढ़ाई के गृहकार्य का कम से कम बोझ।

* समिति द्वारा नियुक्त निरीक्षकों द्वारा समय-समय पर पाठशालाओं का निरीक्षण एवं उचित मार्गदर्शन।

* परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करनेवाले छात्रों को विविध माध्यमों द्वारा विशेष प्रोत्साहन।

* पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा भी जैनदर्शन के अध्ययन की सुविधा।

* अनुदान-इच्छुक प्रत्येक पाठशाला को 200 रुपये मासिक अनुदान व्यवस्था।

अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है...

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में विगत दिनों **डलास (यू.एस.ए.)** से श्री अतुलभाई एवं श्रीमती चारु खारा, **मियामी (यू.एस.ए.)** से श्री महेन्द्रभाई एवं श्रीमती रंजन बेन शाह, **मुम्बई** से डॉ. बासन्ती बेन के साथ मुक्ति मण्डल संघ की 25 सदस्याएँ, **लन्दन** से भगवानजी भाई कचराभाई शाह परिवार के सदस्य श्री शीतल मणीभाई एवं श्रीमती विनीता शाह तथा **लन्दन** से श्री नीरव जयन्तीभाई गुटका इत्यादि विशिष्ट मेहमान पधारे।

आप सभी ने गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान को अनेक गतिविधियों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने के कार्य में संलग्न श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित विभिन्न संस्थाओं की कार्य-प्रणाली का अत्यन्त निकटता से अवलोकन कर अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त करते हुये कहा कि 'अभी तक तो हमने स्मारक की प्रवृत्तियों के बारे में परोक्षरूप से ही बहुत सुना था, किन्तु आज यह सब प्रत्यक्ष देखते हुये अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।'

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट परिवार की ओर से सभी का हार्दिक स्वागत/अभिनन्दन किया गया।

जैन बाल संस्कार ग्रुप शिविर संपन्न

दिल्ली : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा के आयोजकत्व एवं आत्म साधना केन्द्र (आत्मार्थी ट्रस्ट) दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 23 से 30 दिसम्बर, 07 तक शीतकालीन 'जैन बाल संस्कार ग्रुप शिविर' का आयोजन किया गया; जिसमें दिल्ली, उत्तरप्रदेश एवं हरियाणा के कुल 17 स्थानों पर एक साथ शिविर लगा।

सम्पूर्ण शिविर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के निम्नांकित 27 विद्वानों के सान्निध्य में अनेक उपलब्धियों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर के अन्तर्गत **आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली में** पं. सी.बाबूजी शास्त्री, पं. जयकुमारजी शास्त्री, पं. प्रदीपजी शास्त्री, पं. गजेन्द्रजी शास्त्री एवं पं. अजयजी शास्त्री, **मयूर विहार में** पं. संदीपजी शास्त्री, **रघुवरपुरा में** पं. नितिनजी शास्त्री एवं पं. आशीषजी शास्त्री, **शिवाजी पार्क में** पं. प्रतीकजी शास्त्री एवं पं. अविनाशजी शास्त्री, **कैलाश नगर में** पं. वीरचंदजी शास्त्री, **शंकर नगर एक्स.में** पं. अचलजी शास्त्री, **विश्वास नगर में** पं. प्रसन्नजी शास्त्री, **न्यू उस्मानपुर में** पं. सुमितजी शास्त्री, **राजा बाजार में** पं. विशेषजी शास्त्री, **ओल्ड राजेन्द्र नगर में** पं.सुधीरजी शास्त्री, **आर्यपुरा में** पं. शशांकजी शास्त्री, **फरीदाबाद (हरियाणा) में** पं. सोमिलजी शास्त्री, **नोएडा (उ.प्र.) में** पं. मिलिंदजी शास्त्री, **बहादुरगढ़ (हरियाणा) में** पं. रविन्द्रजी शास्त्री, पं. कीर्तिकुमारजी शास्त्री एवं पं. नीतेशजी शास्त्री, **खेकड़ा (उ.प्र.) में** पं. शैलेन्द्रजी शास्त्री एवं पं. नीलेशजी शास्त्री, **सोनागिर सिद्धक्षेत्र में** पं. सचिनजी शास्त्री एवं पं. अंकितजी शास्त्री, **रोहिणी में** पं. अभिजीतजी शास्त्री आदि विद्वानों द्वारा प्रतिदिन प्रवचन, प्रौढ़–बाल कक्षा, जिनेन्द्र पूजन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से महती धर्मप्रभावना हुई।

शिविर में लगभग 900 बच्चों एवं 400 महिला–पुरुषों ने तत्त्वज्ञान का रसास्वादन किया। अंतिम दिन सभी स्थानों पर परीक्षा ली गई।

1 जनवरी 08 को आत्मार्थी ट्रस्ट में समापन समारोह के अवसर पर श्री सम्मेद शिखरजी विधान एवं नूतन वर्षाभिनंदन का कार्यक्रम रखा गया। इस प्रसंग पर ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हुआ।

शिविर ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन तथा पं. राकेशजी शास्त्री, पं. ऋषभजी शास्त्री, पं. संदीपजी शास्त्री, पं. अमितजी शास्त्री, पं. सुरेन्द्रजी शास्त्री एवं पं. प्रमेशजी शास्त्री के कुशल संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ।

(पृष्ठ 7 का शेष ...)

हमारी यह बात आपको कैसी लगी ? यदि आपको ठीक लगती है तो हमारा प्रयोजन सिद्ध हो गया। यदि कोई नहीं बोलेगा, नहीं लिखेगा; तो सत्य सामने कैसे आयेगा, सत्य का प्रचार कैसे होगा ?

आप इसके फल से भी परिचित होंगे, क्या–क्या हो सकता है इसका परिणाम ? है आपको इसका कुछ अनुमान ?

क्यों नहीं, पर अब तो हम किनारे पर ही आ गये हैं। यदि कोई नहीं बुलायेगा तो आने–जाने के श्रम से बचेंगे, धूल–मिट्टी के दूषित वातावरण से बचेंगे; लिखने–पढ़ने के लिये और अधिक समय मिलेगा।

जो कुछ भी होगा; उस सबके लिये हम पूरी तरह तैयार हैं।

मंदिर एवं स्वाध्याय भवन का शिलान्यास सम्पन्न

राघौगढ़ (म.प्र.) : यहाँ मुमुक्षु महासंघ के तत्त्वावधान में दिनांक 5 दिसम्बर, 07 को श्री चौबीस तीर्थंकर जिनमंदिर एवं स्वाध्याय भवन का शिलान्यास बाल ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में श्री सुभाषचंद–श्रीमती राजमती जैन भोपाल एवं श्री विपिनकुमार–श्रीमती ज्योति जैन मलेशिया के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

स्वाध्याय भवन का शिलान्यास डॉ. कबूलचंद आनंदकुमार पांडे म्याना ने किया एवं ध्वजारोहण श्री नेमीचंदजी आमल्यावालों के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री चौबीस तीर्थंकर विधान के अतिरिक्त जयपुर से पधारे पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के प्रवचनों का लाभ भी समाज को मिला।

गुरुदेवश्री स्मृति दिवस मनाया

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर प्रांगण में दिनांक 30 नवम्बर, 07 को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी स्मृति दिवस मनाया गया, जिसके अन्तर्गत प्रात: काल प्रवचनोपरान्त गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में गुरुदेवश्री के जीवन–वृत्त एवं अध्यात्म क्षेत्र में उनके योगदान पर प्रकाश डाला गया।

रात्रि में नंदीश्वर विद्यापीठ एवं वीतराग–विज्ञान पाठशाला के बच्चों द्वारा गुरुदेव के जीवन को चित्रित करती हुई एकांकी 'कानू की ढ़ृढता' का मंचन किया गया। एकांकी का निर्देशन कु.दीप्ति मोदी, संचालन मनीषजी शास्त्री एवं आभार प्रदर्शन सुनीलजी सरल ने किया।

वैराग्य समाचार

1. **बैंगलोर निवासी श्री एम. बी. पाटील** का दिनांक 30 नवम्बर, 07 को 77 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया।

आपको गुरुदेवश्री के प्रवचनों का साक्षात् लाभ प्राप्त हुआ था। आपने आचार्य कुन्दकुन्द विरचित ग्रंथाधिराज समयसार के साथ ही अन्य लगभग 50 से भी अधिक ग्रंथों का कन्नड़ भाषा में अनुवाद किया गया है। कर्नाटक प्रान्त में धार्मिक शिक्षण–शिविरों की सफलता एवं घर–घर में स्वाध्याय की रुचि आपकी ही प्रेरणा का परिणाम है। सन् 1978 से 29 वर्षो तक आप आत्मधर्म के संपादक भी रहे थे।

आपके चिर वियोग से दि. जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, बैंगलौर एवं जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

2. आत्मधर्म (गुजराती) के सम्पादक **श्री नागरदास बेचरदास मोदी, सोनगढ़** का दिनांक 28 दिसम्बर,07 को 87 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। आप विगत 33 वर्षो से आत्मधर्म के सम्पादक थे। बोधि समाधी निधान, द्रव्यदृष्टि जिनेश्वर पर्यायदृष्टि विनश्वर एवं द्रष्टि का निधान आपके ही द्वारा सम्पादित कृतियाँ है।

3. टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक श्री प्रक्षाल शास्त्री के पिताजी **श्री चाँदमल संगावत,** उदयपुर का दिनांक 2 जनवरी, 08 को देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी स्वाध्यायी व्यक्ति थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही मुक्ति प्राप्त करें ह्न यही मंगल भावना है।

ला

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार 20

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे .....)

सकलचारित्र के धारी महाव्रती मुनिराज द्रव्यहिंसा से बचने के लिये प्रमाद छोड़कर दिन में चार हाथ तक की जमीन को देखकर सावधानीपूर्वक चलते हैं ह्न यह उनकी ईर्यासमिति है।

ईर्यासमिति के धारी मुनिराजों की भावना भी ऐसी नहीं होती कि लोग मेरा स्वागत करने आवें, लम्बा जुलूस निकालें; क्योंकि जो स्वागत करने आयेंगे, जो जुलूस आवेगा; वे सब ईर्यासमितिपूर्वक तो चलेंगे नहीं। इसलिये उनकी अनुमोदना मुनिराज नहीं कर सकते।

उनके विहार के समय बिना बुलाये भी अनेक लोग उनके पीछे–पीछे चलने लगते हैं; उनसे भी वे यह नहीं कहते कि अब लौट जाओ; क्योंकि ऐसा कहने का अर्थ यह है कि अभी तक उनका आना मुनिराज को इष्ट था।

लोग उनके पीछे आवें तो आवे, न आवें तो न आवें; उन्हें उनसे कुछ लेना–देना नहीं है। अकेले स्वयं चार हाथ आगे देखकर चलना मात्र ईयासमिति नहीं; अपितु ईर्यासमितिपूर्वक नहीं चलनेवालों को बुलाना–भेजना भी ईर्यासमिति में दोष है।

मुनिराजों का हित–मित–प्रिय बोलना ही भाषासमिति है। भाषा–समिति पूर्वक निकले मुनिराजों के वचन जग का हित करनेवाले, अहित हरनेवाले, सभी प्रकार के संशयों को दूर करनेवाले और सुनने में सुखद होते हैं। ऐसे लगता है मानो उनके मुखरूपी चन्द्रमा से अमृत ही झर रहा है।

भाषा हमें पर से जोड़ती है; परन्तु मुनिराजों को तो पर से जुड़ना ही नहीं है; इसलिये यहाँ मुनिधर्म के सन्दर्भ में भाषा को तीन जगह बाँधा है।

यदि हम दूसरों से नहीं जुड़ना चाहते हैं तो उसका सर्वश्रेष्ठ उपाय नहीं बोलना अर्थात् मौन रखना ही है। इसलिये यहाँ कहा गया है कि बोलो ही नहीं तो सब से बढ़िया बात है, वचनगुप्ति है।

यद्यपि मौन सर्वश्रेष्ठ है; तथापि देशनालब्धि की दृष्टि से ज्ञानी सन्तों का बोलना भी अनिवार्य है, अन्यथा मुक्ति के मार्ग का लोप हो जावेगा। देशनालब्धि की उपलब्धि रहे ह्न इस भावना से बोले गये वचन आत्महितकारी ही होना चाहिये। यहाँ हित का अर्थ लौकिक हित नहीं लेना, अपितु आत्महितकारी तत्त्व प्रतिपादन ही है।

तात्पर्य यह है कि मुनिराज यदि बोलते हैं तो उन्हें मात्र आत्महितकारी तत्त्व प्रतिपादन ही करना चाहिये। वह भी दिनभर नहीं; सीमित बोलना श्रेष्ठ है। सीमित तत्त्व प्रतिपादन भी प्रिय भाषा में ही हो, कठोर भाषा में नहीं।

हित–मित–प्रिय के साथ–साथ वह तत्त्व प्रतिपादन सत्य भी होना चाहिये। सत्य को समझे बिना सत्य बोलना संभव नहीं है; इसलिये पहले सत्य समझना चाहिये। इसप्रकार सत्य समझना सत्यधर्म है, सत्य बोलना सत्य महाव्रत है, हित–मित–प्रिय बोलना भाषा समिति है और कुछ भी नहीं बोलना वचनगुप्ति है।

शरीर के पोषण के लिए नहीं; अपितु तप की वृद्धि के लिए मुनिराजों का उच्च कुल के श्रावक के घर में दाता के आश्रित १६ उद्गमादि दोष, पात्र के आश्रित १६ उत्पादन दोष तथा आहार संबंधी १० और भोजनक्रिया संबंधी ४ दोष ह्न इसप्रकार कुल मिलाकर ४६ दोष टालकर नीरस आहार लेना ऐषणासमिति है और ज्ञान का उपकरण शास्त्र, संयम का उपकरण पीछी और शौच का उपकरण कमण्डलु को अच्छी तरह देखकर उठाना–रखना आदाननिक्षेपण समिति है।

वे मुनिराज मल–मूत्र और कफ आदि का क्षेपण भी निर्जन्तु स्थान देखकर ही करते हैं। उनके इस आचरण को प्रतिष्ठापना समिति कहते हैं।

इसप्रकार हम देखते हैं कि ये पाँचों महाव्रत और पाँचों समितियाँ द्रव्यहिंसा और भावहिंसा से बचने के साधन हैं।

द्रव्यहिंसा के त्याग के लिए यह जानना जरूरी है कि जिन जीवों का घात हमसे होने की संभावना है; वे कहाँ–कहाँ रहते हैं, किन–किन शरीरों में रहते हैं ? स्थूल रूप से तो हम भी यह निर्णय कर सकते हैं; किन्तु सूक्ष्मता से इस बात को जानने के लिए सर्वज्ञ भगवान की दिव्यध्वनि के अनुसार लिखी गई जिनवाणी ही एकमात्र शरण है।

अत: उक्त सन्दर्भ में जिनवाणी में श्रावकों या मुनिराजों के लिए आचरण और व्यवहारसंबंधी कुछ मर्यादायें, कुछ नियम–उपनियम बताये गये हैं; उन मर्यादाओं और नियम–उपनियमों का विधिवत पालन करने से अहिंसा धर्म का भलीभाँति पालन होता है।

आलू आदि जमीकन्दों में अनन्त निगोदिया जीव होते हैं ह्न इस बात का निर्णय हम अपनी आँखों से देखकर नहीं कर सकते। यह बात हमें जिनवाणी के स्वाध्याय से ही ज्ञात होती है। इसलिये हमारा कर्तव्य है कि जिनवाणी में जिन्हें अभक्ष्य कहा गया है, अनुपसेव्य कहा गया है; उनका सेवन हमें नहीं करना चाहिये। जिनवाणी में भूमिकानुसार जो आचरण करने योग्य कहा है, वह करे और जिसका निषेध किया गया है, वह न करें। यही मार्ग है, शेष सब उन्मार्ग है। उक्त सन्दर्भ में अपनी बुद्धि से कल्पनालोक में विचरण करने से कोई लाभ नहीं है।

आचार्य कुन्दकुन्दकृत प्रवचनसार ग्रंथ में मुनिराजों को आगम–चक्षु कहा गया है। तात्पर्य यह है कि मुनिराज अपने आचरण और व्यवहार को आगम के आधार पर सुनिश्चित करते हैं। इसलिये हमारा कर्तव्य है कि श्रावकों और मुनिराजों के आचरण और व्यवहार को आगम की कसौटी पर कसें, परखें; अपनी काल्पनिक मान्यताओं के आधार पर नहीं।

आगम का अभ्यास न होने से जिन्हें पता ही नहीं है कि जीव कहाँ–कहाँ होते हैं; वे उनकी हिंसा से कैसे बच सकते हैं और अपनी वाणी से तत्संबंधी सत्य का उद्घाटन भी कैसे कर सकते हैं ?

तात्पर्य यह है कि वे उक्त सन्दर्भ में सत्य भी नहीं बोल सकते।

५ समितियों में उनका ४ हाथ जमीन देखकर चलना, हित–मित–प्रिय वचन बोलना, ४६ दोष टालकर निरन्तराय आहार लेना, पींछी–कमंडलु और शास्त्रों को अच्छी तरह देखकर सावधानी से उठाना–रखना और निर्जन्तु भूमि देखकर मल–मूत्र क्षेपण करना भी जीवों की रक्षा की भावना से ही होता है।

एक भाई हमसे बोले कि पुराने जमाने में मुनिराज सवारी का त्याग इसलिये करते थे कि तब सवारी के काम में पशु आते थे और उन पर सवारी करने से उन्हें तकलीफ होती थी; पर आज तो सबकुछ पेट्रोल से चलता है; अत: अब उन्हें सवारी से परहेज नहीं करना चाहिये।

हमने उनसे कहा कि यह बात नहीं है। भाई ! मुनिराज चार हाथ जमीन देखकर चलते हैं। तो क्या हाथी, घोड़े और बैल भी ईर्यासमिति–पूर्वक चार हाथ जमीन देखकर चलेंगे ? क्या आज की मोटरगाड़ियाँ भी चार हाथ जमीन देखकर चलती हैं ? अत: व्यर्थ के कुतर्क से कोई लाभ नहीं है।

मुनिराजों का रक्षा का भाव भी यहीं तक सीमित है कि उनके निमित्त से किसी का घात न हो जाय, किसी को पीड़ा न पहुँचे; दूसरे से दूसरों को बचाना उनका काम नहीं है। यह तो आपको मालूम ही है कि दूसरों को दूसरों से बचाने के तीव्रतम भाव के कारण मुनिराज विष्णुकुमार को मुनिपद छोड़ना पड़ा था। उनकी दीक्षा भंग हो गई थी और उन्हें दुबारा दीक्षा लेनी पड़ी थी; जिससे उनकी वरिष्ठता भी प्रभावित हुई थी।

इस सन्दर्भ में विशेष जानने की इच्छा हो तो लेखक की अन्य कृति **'रक्षाबंधन और दीपावली'** नामक पुस्तक को पढ़ना चाहिये।

अधिकांशत: महान सन्त वनवासी होते हैं, जंगल में रहते हैं और जंगलों में तो जंगलराज ही होता है। जंगल में उनकी आँखों के सामने ही एक मांसाहारी जानवर शाकाहारी जानवर का शिकार कर रहा हो तो क्या वे उसे बचाने के लिये मांसाहारी को रोकेंगे ? रोकेंगे तो कैसे रोकेंगे; क्योंकि आसानी से तो वह रुकनेवाला है नहीं।

यदि वह इसप्रकार आसानी से रुक जाय तो उसे भूखा रहना पड़ेगा, भूखा मरना पड़ेगा। उसे रोकने के लिये क्या वे उसे पीटेंगे, मारेंगे ?

यदि हाँ; तो वे मुनिराज भी हिंसक हो जायेंगे। बिना हथियारों के, बिना जोखम उठाये यह सब होगा भी कैसे ? बात एक दिन की और एक जीव की तो है नहीं; जंगल में तो यह सब प्रतिदिन होता है। यदि आत्मार्थी मुनिराज इसमें उलझेंगे तो फिर वे आत्मा का ध्यान कब करेंगे ?

एक जानवर को एक बार बचा लिया तो उसे निरन्तर कैसे बचाये रखेंगे ? क्या वे उसका पालन–पोषण भी करेंगे ? यदि हाँ; तो फिर तो पूरा ताम–झाम खड़ा हो जायेगा। जिस उलझन को छोड़कर आये हैं; उसी में और अधिक गहराई से उलझ जायेंगे।

यह काम तो राजा–महाराजाओं से भी नहीं हो सकता, चक्रवर्तियों से भी नहीं हो सकता; क्योंकि यदि हो सकता होता तो उनके राज्य में आनेवाले जंगलों में एक जीव दूसरे को मारकर नहीं खा सकता था।

यह एक असंभव–सा कार्य है। अत: मुनिराजों की करुणा या रक्षा करने का भाव यहीं तक सीमित है कि उनके द्वारा या उनके निमित्त से किसी जीव का घात न हो, किसी जीव को पीड़ा न पहुँचे। इसीलिये ये पंच महाव्रत और पाँच समितियाँ हैं; जिनका पालन वे सावधानीपूर्वक करते हैं।

मुनिराज १४ प्रकार के अंतरंग और १० प्रकार के बहिरंग परिग्रह के त्यागी होते हैं। जब उन्होंने तन का वस्त्र भी छोड़ दिया तो फिर वे धर्म के नाम पर ही सही, गृहस्थों के करने योग्य भवन निर्माण आदि कार्यों में कैसे उलझ सकते हैं ? क्या ये कार्य बिना हिंसा के संभव हैं ?

अरे भाई ! इन कार्यों को करना–कराना तो बहुत दूर की बात है; उनके द्वारा तो इनकी अनुमोदना भी नहीं हो सकती। गृहत्यागी गृहस्थ भी जब ये कार्य नहीं कर सकता तो फिर मुनिराजों की तो बात ही अलग है। वे तो चलते–फिरते सिद्ध हैं; उनकी वृत्ति तो अलौकिक होती है।

मेरे एक शिष्य ब्रह्मचारी हैं, गृहत्यागी हैं। उन्होंने एक बहुत बड़ा प्रोजेक्ट अपने हाथों में ले लिया और उसके प्रति समर्पित हो गये।

उक्त परिसर में मंदिर के साथ–साथ शताधिक कमरे भी बन गये थे। मंदिर की गुम्मद का काम चल रहा था और मैं वहाँ से अचानक पास हुआ तो उसे देखने चला गया।

मैंने बहुत मना किया कि मैं हृदयरोगी हूँ; अत: ऊपर तक नहीं जा सकता; पर वे कब माननेवाले थे। मजदूरों से उठवाकर वे मुझे ऊपर ले गये और वहाँ बताया कि यह इतने फीट ऊँचा गुम्मद है। यहाँ से १०–१५ किलोमीटर तक आसानी से देखा जा सकता है।

वे अत्यन्त उत्साहित थे और उस गुम्मद की स्तुति इसप्रकार कर रहे थे कि शायद इतने उत्साह से कभी भगवान की भी न की होगी। मुझसे उन्हें क्या अपेक्षा थी यह तो वे ही जाने; पर मैंने अत्यन्त गंभीरता के साथ जो कुछ कहा, वह कुछ इसप्रकार था ह्न

हे भाई ! यदि तुम शादी कर लेते और गृहस्थी में रहते तो शायद सम्पूर्ण जीवन अपने बाप–दादों के मकान में ही गुजार देते। यदि बुढ़ापे में बच्चों की सुविधा के लिये अपना मकान भी बनाते तो वह भी दो कमरों से अधिक का नहीं होता। आज तुम गृहत्यागी ब्रह्मचारी क्या हो गये कि तुम्हें दो सौ कमरे कम पड़ते हैं। वे भी एक गाँव में नहीं, गाँव–गाँव में। क्या हो गया है तुम्हें? हमने तो ऐसा कुछ नहीं पढ़ाया था। आज लोग हमसे पूँछते हैं कि ये आपके शिष्य हैं। क्या आपने यही पढ़ाया है ? तो शर्म के मारे माथा झुक जाता है।

तब वे तपाक से बोले ह्न सारी समाज में यही चल रहा है। हम तो गृहस्थ हैं; पर ....।

मैंने उन्हें यहीं पर रोक दिया और कहा मुझे इससे आगे कुछ नहीं सुनना है। तुम हमारे छात्र हो, तत्त्वाभ्यासी हो, आत्मकल्याण की भावना से घर–बार छोड़ चुके हो; इसलिये तुम से कुछ कहने का विकल्प आता है। अन्यथा हमें किसी से क्या लेना–देना ?

इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं जिनमन्दिरों और धर्मशाला आदि के निर्माण का विरोधी हूँ; मैं तो यह कहना चाहता हूँ कि यह काम गृहस्थों के हैं; गृहत्यागियों के नहीं। हम जैसे उन विद्वानों के भी नहीं, जो जिनवाणी माँ की सेवा कर सकते हों, आत्मार्थियों को जैन तत्त्वज्ञान की शिक्षा दे सकते हों।

लोग कहते हैं कि आपने यह बात सबके सामने क्यों कही, पुस्तक में क्यों लिखी; आपको अधिक विकल्प था तो अकेले में भी कह सकते थे।

अरे भाई ! अकेले में ही तो कहा था; पर कहीं कोई असर दिखाई नहीं दिया; इसलिए सार्वजनिक बोल रहे हैं और लिख भी रहे हैं।

जब कहने से कुछ नहीं हुआ तो सभा में बोलने से भी क्या होगा, लिखने से भी क्या होगा ?

इतना तो होगा ही कि भविष्य में उक्त प्रवृत्तियों की समीक्षा होगी तो कम से कम उनके कर्त्ता–धर्त्ता के रूप में हमारा नाम तो नहीं जुड़ेगा।

आप उनके उत्सवों में जाते हैं, उत्साह से प्रवचन भी करते हैं और इन सबमें सामिल भी होते हैं ह्न इसे क्या समझा जाये ?

यही कि यदि हम उक्त उत्सवों में न जाये तो हमें यह बात कहने का अवसर भी कब मिलेगा ? अपनी बात जन–जन तक पहुँचाने का एकमात्र यही तो उपाय है। यदि हम नहीं गये तो फिर तो उक्त विचारधारा का ही बोलबाला हो जायेगा। उक्त विकृतियों पर प्रश्नचिह्न खड़ा करनेवाला भी कोई नहीं रहेगा।

(शेष पृष्ठ–5 पर...)

17 जनवरी 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

* ऐसे मनाएँ नववर्ष *

* प्रतिमाह एक नये बालक को पाठशाला में जाने हेतु प्रेरित करें।
* प्रतिमाह कम से कम एक परिवार को जिनवाणी भेंट करें।
* सप्ताह में एक दिन सपरिवार कम से कम आधा घंटे स्वाध्याय करें।

अपने मंदिर में नियमित पाठशाला, स्वाध्याय सभा का संचालन करें।

ह्न अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

नि:शुल्क मंगावें

पण्डित खेमचंदजी जैन (जैनदर्शनाचार्य) की धर्मपत्नी श्रीमती नीलम जैन ने देशभर में संचालित वीतराग-विज्ञान पाठशालाओं के बच्चों की सुविधा हेतु बालबोध प्रश्नोत्तरी भाग-1 का लेखन किया है। इसमें पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित बालबोध पाठमाला भाग-1 की सम्पूर्ण विषय-वस्तु को सरल तरीके से प्रश्नोत्तर के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिसको भी आवश्यकता हो, वह निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करके नि:शुल्क मंगा लेवें। ह्न खेमचंद जैन

578 ह्न हिरण मगरी, सेक्टर-13, एम.वी.एम. स्कूल के सामने, उदयपुर (राज.) मो. नं. 09414711038

टोडरमल मुक्त विद्यापीठ के छात्रों हेतु...

जिन-जिन छात्रों ने टोडरमल मुक्त विद्यापीठ, जयपुर में अध्ययन हेतु प्रवेश-फॉर्म भेजे हैं, उन सभी को उनके नामांकन क्रमांक भेजे जा चुके हैं। सभी छात्र अपने-अपने निर्धारित कोर्स का अध्ययन प्रारंभ कर देवें। टेस्ट पेपर 8 फरवरी तक यहाँ से भेजा जावेगा, जिसे आपको 20 फरवरी तक भरकर भेजना है। फाईनल परीक्षा मध्य अप्रैल तक आयोजित की जावेगी।

पाठ्य पुस्तक टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के बिक्री विभाग को पत्र लिखकर मंगा सकते हैं।

ह्न नियंत्रक, परीक्षा विभाग, टोडरमल मुक्त विद्यापीठ

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट-एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

साधना चैनल पर प्रवचन देखना एवं सुनना न भूलें

प्रतिदिन रात्रि 8.20 बजे से

आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज

एवं

प्रतिदिन प्रात: 6.20 बजे से

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल

ध्यान दें !

जैनपथप्रदर्शक एवं के सभी सदस्यों को सूचित किया जा रहा है कि वे अपना एड्रेस एक बार अवश्य चैक कर लें, यदि उसमें किसीप्रकार का संशोधन आवश्यक समझें तो उस एड्रेस को जैनपथ से निकालकर, संशोधित एड्रेस के साथ पोस्टकार्ड पर चिपकाकर हमें भेज देवें।

एड्रेस की पूर्णता न होने से या कुछ अशुद्धि होने से अंक हमारे पास लौटकर आ जाता है, जिससे आपको जैनपथप्रदर्शक की अनियमितता सम्बन्धी शिकायत हो सकती है। यदि आपके एड्रेस पर पिनकोड नहीं लिखा है तो वह भी लिखकर भेजें, जिससे जैनपथप्रदर्शक आपको नियमित उपलब्ध हो सके।

जिन महानुभावों को जैनपथप्रदर्शक के दो-दो अंक मिल रहे हों, वे भी कृपया शीघ्रातिशीघ्र सूचित करें। सहयोग के लिये धन्यवाद !

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.

प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल

प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -

ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)

फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८

फैक्स : (०१४१) २७०४१२७